क्लासिक कहानी श्रृंखला

चल मेरे मटके टम्मक टू

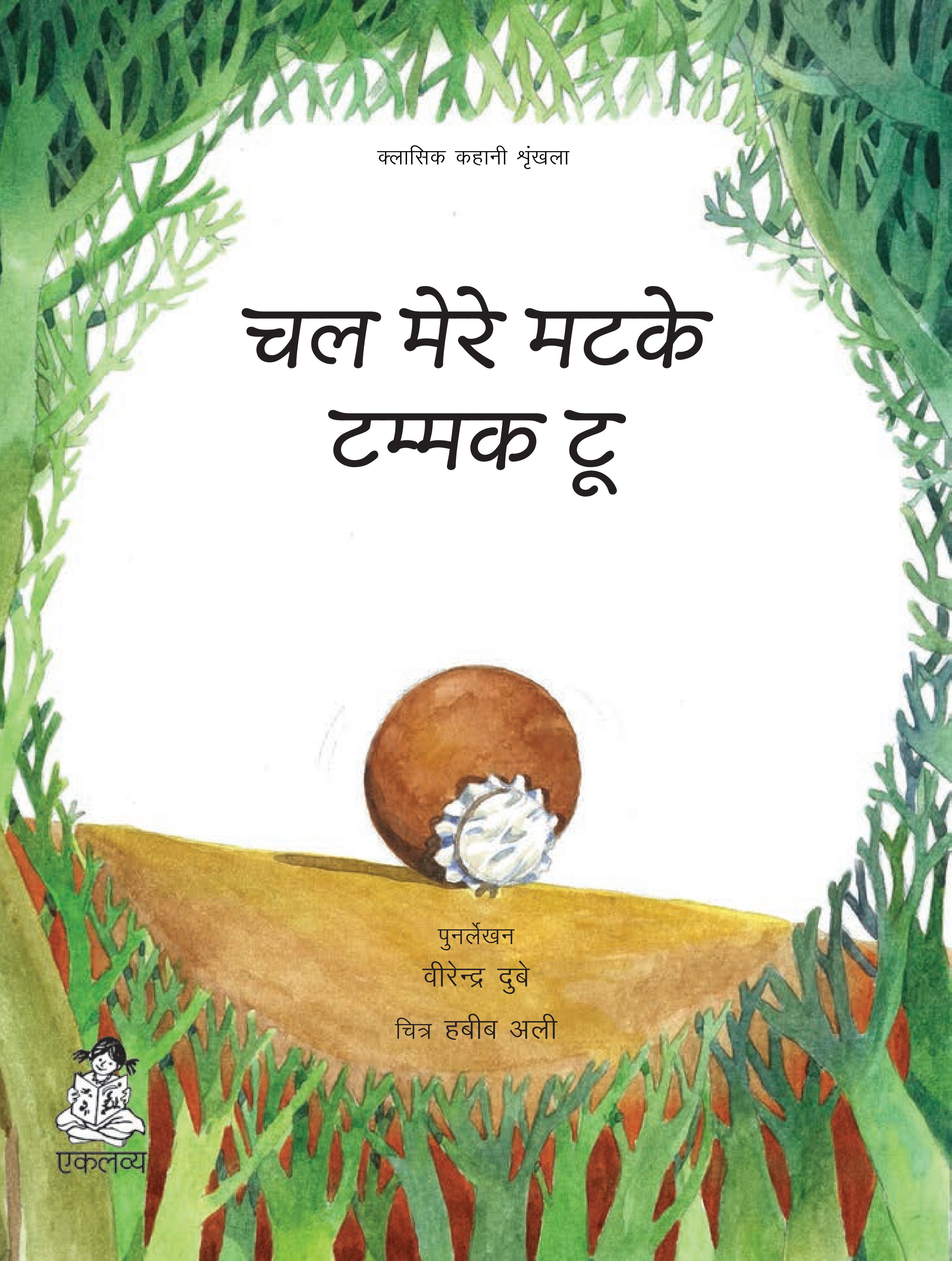

पुनर्लेखन
वीरेन्द्र दुबे

चित्र हबीब अली

एकलव्य

चल मेरे मटके टम्मक टू

पुनर्लेखन
वीरेन्द्र दुबे
चित्र हबीब अली

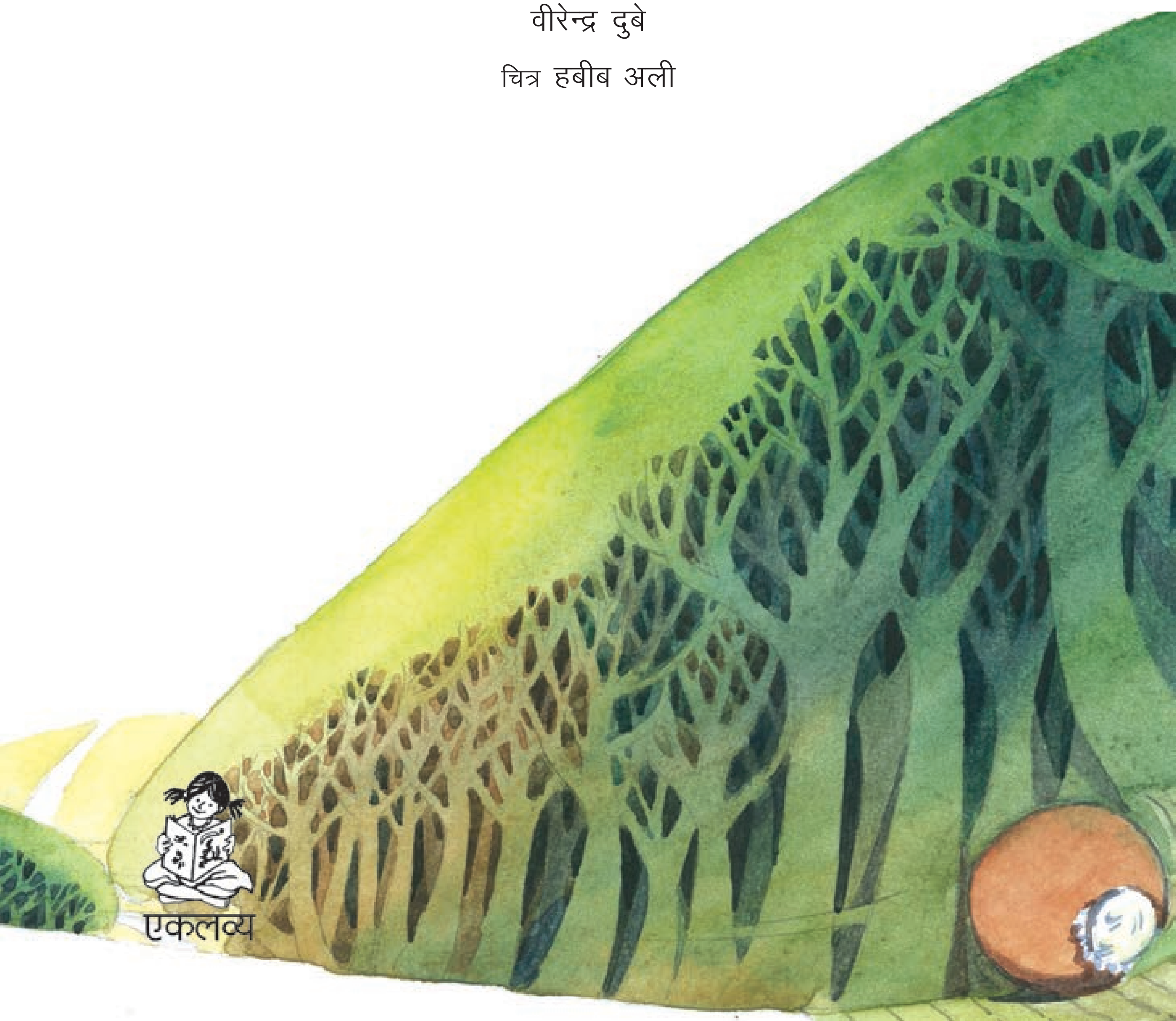

एकलव्य

एक गाँव में एक बुढ़िया रहती थी और दूर शहर में उसकी बिटिया। गाँव और शहर के बीच घना जंगल पड़ता था। जंगल में बड़े खतरनाक जानवर थे। एक बार बुढ़िया की बेटी ने अपनी माँ को अपने साथ रहने का कुछ दिनों का बुलावा भेजा। बुढ़िया भी बहुत दिनों से उससे मिली नहीं थी सो खबर सुनकर खुश हो गई। उसने बेटी के पसन्द के खूब सारे पकवान बनाए और तरह-तरह की चीज़ें इकट्ठी करके चलने की तैयारी कर ली।

चलते-चलते रास्ते में उसे शेर मिला। शेर दहाड़कर बोला, "ऐ बुढ़िया, कहाँ चली। मुझे कई दिनों से कोई शिकार नहीं मिला। मैं तो तेरे को खाऊँगा।" बुढ़िया मुस्कराकर बोली, "अभी क्या, पहले अपनी बेटी से तो मिल आऊँ, खा-पीकर मोटी-ताज़ी होकर आऊँगी तब खाना।" शेर बोला, "अच्छा, ऐसी बात है तो ठीक है। लेकिन जल्दी आना।"

बुढ़िया आगे चली तो उसे भेड़िया मिला। भेड़िया गुर्राकर बोला, "बुढ़िया, बुढ़िया, कहाँ चली। मुझे ज़ोर की भूख लगी है। मैं तेरे को खाऊँगा।" बुढ़िया बड़े आराम से बोली, "क्या मुझ दुबली-पतली को खाएगा। पहले अपनी बिटिया से मिल आऊँ, वहाँ खूब माल-मसाला खाकर मोटी-ताज़ी होकर आऊँगी, तब खा लेना।" भेड़िया बोला, "ठीक है, जल्दी लौटना और अपनी कही से मुकर मत जाना।"

बुढ़िया कुछ दूर और चली तो उसे अजगर मिला। अजगर फुफकारकर बोला, "अरे बुढ़िया, कहाँ चली। कई दिनों से मुझे कोई इन्सान नहीं मिला। मैं तुम्हें निगल जाऊँगा।" बुढ़िया सिहरकर बोली, "अभी तो मैं दुबली-पतली हूँ। बिटिया के घर से खा-पीकर मोटी-ताज़ी होकर आऊँगी, तब खा लेना।" अजगर बोला, "ठीक है, पर जल्दी आना।"

चलते-चलते बुढ़िया को लकड़बग्घा मिला। लकड़बग्घा ज़ोर का ठहाका लगाकर बोला, "कहाँ चल दी बूढ़ी अम्मा। मैं कई दिनों का भूखा हूँ। मैं तुझे खाऊँगा।" बुढ़िया सहमकर बोली, "अभी दुबले-पतले हाड़-मांस में क्या मज़ा आएगा। बिटिया के घर हो आऊँ, खा-पीकर मोटी-ताज़ी होकर लौटूँगी, तब खाना।" लकड़बग्घा बोला, "ठीक है, जल्दी आना। वहीं मत रह जाना।"

इस तरह जैसे-तैसे जंगल पार कर वह अपनी बेटी के घर पहुँच गई। बेटी उसे देखकर बहुत खुश हुई। मनपसन्द पकवान पाकर वह फूली नहीं समाई। बेटी के घर बुढ़िया की खूब खातिरदारी हुई। दोनों खूब बोले, बतियाए, घूमे-फिरे।

अब बुढ़िया के वापस जाने का समय पास आ गया तो बुढ़िया उदास रहने लगी। बेटी ने कारण पूछा तो ना-नकुर करने के बाद उसने जंगल में जानवरों के साथ हुई बातें बतला दीं। बुढ़िया ने कहा, "तब तो जैसे-तैसे बातों में भरमाकर चली आई, पर अब वे पक्के में मारकर खा जाएँगे।"

बेटी बहुत समझदार थी। उसने कहा, "माँ, बिलकुल चिन्ता मत करो। मैं सब इन्तज़ाम कर दूँगी। जैसा बताती हूँ वैसा करना।" बेटी ने एक खूब बड़ा-सा मटका मँगवाया। उसमें खाने-पीने का सामान रखकर बुढ़िया को बिठाल दिया। मटके के मुँह पर पतला कपड़ा बाँध दिया और समझा-बुझाकर मटके को जंगल के रास्ते पर लुढ़का दिया।

बुढ़िया अन्दर बैठी मटके को लुढ़काती जाती और बोलती जाती,
“चल मेरे मटके टम्मक टू, टम्मक टू!”
और मटका आगे लुढ़कता जाता।

जंगल में घुसते ही लकड़बग्घा मिल गया। वह इन्तज़ार में बैठा था। उसने मटके से पूछा, “मटके, मटके, क्या तुमने एक मोटी-ताज़ी बुढ़िया को देखा है?”

अन्दर से बुढ़िया ने डाँटकर बोला, “कहाँ की बुढ़िया, कहाँ का तू, चल मेरे मटके टम्मक टू!”

और जल्दी से मटके को आगे लुढ़का दिया। लकड़बग्घे को आवाज़ कुछ जानी-पहचानी लगी। वह मटके के पीछे-पीछे चलने लगा।

थोड़ा आगे बढ़ने पर अजगर मिला। अजगर ने मटके से पूछा, “मटके, मटके, क्या तुमने एक मोटी-ताज़ी बुढ़िया को देखा है?”

मटके के अन्दर से बुढ़िया ने फटकारकर बोला, “कहाँ की बुढ़िया, कहाँ का तू, चल मेरे मटके टम्मक टू!”

और मटका तेज़ी से लुढ़कने लगा। अजगर भी मटके के पीछे हो लिया।

चलते-चलते भेड़िया मिला। भेड़िये ने मटके से पूछा, “मटके, मटके, क्या तुमने एक मोटी-ताज़ी बुढ़िया को देखा है?”

अन्दर से बुढ़िया ने हड़काकर कहा, “चल हट, कहाँ की बुढ़िया, कहाँ का तू, चल मेरे मटके टम्मक टू!”

अब बुढ़िया और जल्दी-जल्दी मटका लुढ़काकर चलने लगी। आगे-आगे मटका लुढ़क रहा था और पीछे-पीछे लकड़बग्घा, अजगर और भेड़िये चल रहे थे। तभी रास्ते में शेर बैठा मिला। मटके को देखकर शेर ज़ोर से दहाड़ा, “ऐ मटके, तूने बुढ़िया को कहीं देखा है?”

शेर की दहाड़ सुन बुढ़िया हड़बड़ा गई। काँपती आवाज़ में बोली, "क... हाँ...की...बु...ढ़ि...या...क...हाँ...का...तू...। च...ल...मे...रे...म...ट...के...ट...म्म...क...टू...।" और जान बचाने के लिए ज़ोर-ज़ोर से मटका लुढ़काने लगी। हड़बड़ी में वह सामने पड़े बड़े-से पत्थर को देख नहीं पाई। पत्थर से टकराकर मटका फूट गया और बुढ़िया बाहर निकल आई। सभी जानवर हैरानी से देखकर बोले, "अरे, ये तो वही बुढ़िया है?"

पहले तो बुढ़िया थोड़ा घबराई। फिर ज़ोर से बोली, “देखो, अगर मेरे को खाना चाहते हो, तो तुम सब सामने आकर बैठ जाओ।”

सभी जानवर खुश होकर सामने बैठ गए। बुढ़िया झट-से सामने रेत के ढेर पर चढ़ गई और पूरी ताकत से रेत उनकी आँखों में झोंकने लगी। उड़-उड़कर रेत उनकी आँखों में भर गई और उनको दिखना बन्द हो गया। यहाँ सभी जानवर अपनी आँखें मलने में लगे थे तब तक दौड़कर के बुढ़िया अपने घर में घुस गई।

चल मेरे मटके टम्मक टू
CHAL MERE MATKE TAMMAK TOO

पुनर्लेखन: वीरेन्द्र दुबे
चित्र: हबीब अली
डिज़ाइन: कनक शशि
सम्पादन: सीमा

एकलव्य, मार्च 2022
यह किताब क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत है जिसका पूरा विवरण https://creativecommons.org/licenses/by-ncnd/4.0/ पर उपलब्ध है।

इस किताब का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक व चित्रकार और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक से अवश्य सम्पर्क करें।

चित्र कॉपीराइट © हबीब अली

पराग इनिशिएटिव टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

संस्करण: मार्च 2022 (3000 प्रतियाँ)
पहला पुनर्मुद्रण: जून 2022 (3000 प्रतियाँ)
दूसरा पुनर्मुद्रण: जुलाई 2023 (5000 प्रतियाँ)
तीसरा पुनर्मुद्रण: मई 2025 (3000 प्रतियाँ)
चौथा पुनर्मुद्रण: फरवरी 2026 (3000 प्रतियाँ)
कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 220 gsm एफबीबी (कवर)
ISBN: 978-93-91132-70-5
मूल्य: ₹ 50.00

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन: +91 755 - 258 7551

वीरेन्द्र दुबे

पचास सालों से लगभग देश भर में बच्चों के बीच साहित्य, कला व शिक्षा के क्षेत्र में अथक सक्रिय। *चकमक, साइकिल, प्लूटो* आदि बाल पत्रिकाओं में कविताएँ व कहानियाँ लगातार प्रकाशित। बच्चों की कविताओं का संग्रह *चार चटोरे* प्रकाशित। वर्तमान में मध्य प्रदेश के इन्दौर शहर में निवास।

हबीब अली

ग्वालियर में रहने वाले हबीब, शहरवासियों की रोज़मर्रा की ज़िन्दगी को चित्रित करना पसन्द करते हैं। उन्होंने गवर्नमेंट इंस्टीट्यूट ऑफ फाइन आर्ट्स, ग्वालियर से पेंटिंग में स्नातक और रियाज़ अकादमी, भोपाल से इलस्ट्रेशन का कोर्स किया है। उन्होंने डकबिल बुक्स, तूलिका बुक्स, रूम टू रीड, एनसीईआरटी, चाइल्ड फंड, लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन (LLF), एकलव्य, एकतारा, प्रथम जैसे कई अन्य प्रकाशकों के लिए किताबों का चित्रण किया है। उनकी किताब *A home of our own* को 'संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य बुक क्लब (SDG Book Club)' वर्ष 2020 के लिए चुना गया है। उनसे ईमेल के ज़रिए सम्पर्क कर सकते हैं – habibali140297@gmail.com

लोककथाओं के अथाह सागर में से प्रस्तुत है यह लोककथा। हम सब ने अपने बचपन में अपनी नानी-दादी से कभी न कभी इस लोककथा को ज़रूर सुना होगा।
आइए, एक बार फिर से इस लोक-चित्रकथा का मज़ा लें और अपने इर्द-गिर्द मौजूद बच्चों को भी इससे सराबोर कराएँ!

एकलव्य

मूल्य: ₹ 50.00

9 789391 132705

parag